



वायु – यह है हवा!

कहानी - माधुरी पाई

हर बार जब मैं गरम-गरम पानी से नहा चुकता हूँ,
मेरा गीला बदन ठंडा-ठंडा महसूस करता है।

कौन यह कर जाता है?

वायु – यह है हवा!

मेरे प्याले का बहुत ही गरम-गरम दूध,
झट से गटागट पीने लायक हो जाता है!

कौन ऐसा कर देता है?

वायु – यह है हवा!

खिड़की का पर्दा फर् - फर् उड़ता है,
और, हौले से मेरे चेहरे को सहला जाता है।

कौन ऐसा करता है?

वायु – यह है हवा!

दूर मेघों में कड़कती बिजली,
मेरी ओर आते ये काले-काले बादल ।

कौन इन्हें लाता है?

वायु – यह हवा!

झूमती ये डालियाँ, फरफराते पत्ते
धीमे से झरते हैं फूल ।

कौन यह कर गया?

वायु – यह है हवा!



**PRATHAM
BOOKS**

A Book in Every Child's Hand



This story has been provided for free under the CC-BY
license by [Pratham Books](https://www.prathambooks.org/). Illustrated by Rijuta Ghate.





घर से दूर हम खेल रहे हैं,
फिर भी, मुझे उन मिठाइयों की खुशबू आ रही है,
जो माँ बना रही हैं,
कौन यह करता है?
वायु – यह हवा!
खिड़की पर रखा था कांच का गिलास,
ज़मीन पर गिर कर चूर-चूर हो गया ।
भाग्य से, मैं तो वहाँ थी ही नहीं!
किसने की ये शैतानी?
पक्का, यह थी वायु-यह हवा!
सीटी बजती है, रेलगाड़ी आने वाली है,
मैं उसे देख भी नहीं पाती, पर उसका शोर सुनाई दे जाता है।
कौन ऐसा करता है?
वायु – यह है हवा!
जो न दिखाई देती है,
न सुनाई देती है,
बिन बोले, चुपचाप
सारे काम कर जाती है।
ऐसा कौन हो सकता है?
बेशक, यह है हवा!

समाप्त

Click below to follow us:

